हबक्कूक

1 हबक्कूक भविष्यद्वक्ता को मिला भारी
संदेश 2 हे याहवे, मैं कब तक आपके
सामने गिड़गिड़ाता रहूँगा और आप मेरी
अनसुनी करते रहेंगे ? आपके सामने मैं
ऊँची आवाज़ से कहता रहा हूँ - "उपद्रव",
"उपद्रव" । क्या आप मुक्ति[a] नहीं देंगे ?
3 आप मुझे बेकार के काम क्यों दिखाते हैं ?
मुझे यह भी बताएँ कि आप क्यों सहन करते
रहते हैं ? मेरी आँखों के सामने लूट-पाट मची
है । लोग उपद्रव करने में लगे हैं । लड़ाई
झगड़े भी हो रहे हैं । आपसी वाद-विवाद भी
एक आम बात है । 4 इसलिए नियमशास्त्र
की कोई परवाह नहीं करता है । इन्साफ़
तो देखने को भी नहीं मिलता है । बुरे लोग
भले लोगों की नाके-बन्दी कर रहे हैं । सच
पूछें तो इन्साफ़ की तो हत्या हो चुकी है ।
5 तब परमेश्वर ने कहा," चारों ओर देशों पर
नज़र डालो और आश्चर्य से भर जाओ । मैं
तुम्हारे जीते जी ऐसा करूँगा, कि जब वह
तुम्हें बताया जाए, तो तुम्हारे लिए विश्वास
करना मुश्किल हो जाएगा । 6 कसदी लोग
निर्दयी होते हैं । वे सारी दुनिया में फैल गए
हैं और अपना अधिकार ज़माना चाहते हैं ।
मैं उन्हें प्रेरित करूँगा । 7 वे दिखने में बहुत
डरावने लगते हैं । वे खुद ही अपने न्याय की
बड़ाई और प्रशंसा का कारण हैं । 8 उनके
घोड़ों की रफ़्तार चीतों से बढ़ कर है । शाम
को शिकार करने वाले हुंडारों से अधिक वे
कठोर हैं । उनके सवार दूर-दूर कूदते और
फाँदते हुए आते हैं । वे लोग दूर से आने
वाले हैं । जिस तरह से उकाब अपने शिकार
पर झपट्टा मारता है, वे भी करते हैं । 9 वे
सभी उत्पात मचाने आते हैं । बिना रोक-टोक
वे आगे बढ़ते जाते हैं । वे अपने बन्दियों
को बड़ी संख्या में इकट्ठा कर लेते हैं । 10 वे
शासकों और गवर्नरों की हँसी उड़ाते हैं और
उनके लिए मज़बूत किले कुछ भी नहीं है ।
वे उन पर जीत हासिल कर लेते हैं । 11 हवा
की तरह वे चलते हैं वे अपनी सीमा के बाहर
जाते हैं और दोषी ठहरते हैं । उनकी ताकत
ही उनका देवता है ।" 12 हबक्कूक का जवाब
था," मेरे प्रभु परमेश्वर, क्या आप सदा-सदा
से नहीं हैं ? इसलिए हम जीवित ही रहेंगे । हे
याहवे, आपने उन्हें इन्साफ़ के लिए ठहराया
है । हे मेरी चट्टान, आपने हमें सुधारने के लिए
उनको बैठाया है । 13 आपकी आँखें इतनी
शुद्ध हैं, कि आप बुराई नहीं देख सकते ।
हिंसा-लूटपाट आदि को देख कर आप शान्त
नहीं रहेंगे । 14 आप इन्सान को समुन्दर की
मछलियों और रेंगने वाले जानवरों की तरह
क्यों बनाते है, जिन के ऊपर कोई राज्य करने
वाला नहीं है ? 15 उनके खुश होने का कारण
यह है कि वह सभी इन्सानों को बंसी से
पकड़ते हैं या जाल में घसीटते हैं । इस कारण
वह खुश हैं । 16 इसीलिए वह अपने फन्दे के
सामने कुर्बानी चढ़ाते और अपने जाल के
सामने धूप जलाते हैं । ऐसा इसलिए क्योंकि
उनके द्वारा उनका भाग समृद्ध है और भोजन
बहुतायत से है । 17 वे लोग अपने जालों को
खाली करते जाते हैं और देश के बाद देश
को घात करते जाते हैं ? "

2 मैं पहरेदारी करता रहूँगा । गुम्मट पर
चढ़ जाऊँगा और दृष्टि दौड़ाऊँगा, वहीं मैं

[a] 1.2 आज़ादी

सुनना चाहूँगा कि वह क्या कहना चाहते हैं।
मुझे डाँट पड़ जाने पर मेरा जवाब क्या होगा
? 2 याहवे का संदेश मुझे मिला, “जो कुछ
तुम्हें दिखाया गया है, उसे पटिया पर लिखो
ताकि, संदेश पहुँचाने वाला दौड़ते-दौड़ते भी
पढ़ सके । 3 यह दर्शन अपने समय पर पूरा
होगा । इसमें समय लग सकता है, इन्तज़ार
करते रहना । वह पूरा ज़रूर होगा । 4 देखो
उसके मन में घमण्ड है वह सही मन नहीं
रखता है । लेकिन प्रभु का प्रेमी अपने विश्वास
के द्वारा ज़िन्दा रहेगा । 5 सचमुच में इन्सान
दाखरस के कारण अपराध करता है । वह
घमण्डी है । उसके पैर घर पर नहीं टिकते हैं
। उसकी इच्छाएँ नरक की तरह फैली हुई हैं
। जिस तरह से मौत सन्तुष्ट नहीं होती है ।
सारे देशों को वह इकट्ठा कर लेता है और
अपने लिए लोगों का ढेर लगा लेता है ।
6 ये सब क्या उस का मज़ाक नहीं उड़ाएँगे
क्या ये सब ताने मारते हुए मज़ाक करके
यह नहीं कहेंगे कि हाय उस पर जो दूसरों
के पैसे से दौलतमन्द हो जाता है और गिरवीं
की चीज़ों से अपना घर भर लेता है - लेकिन
कब तक ? 7 क्या तुम्हारे कर्ज़दार अचानक
उठ खड़े न होंगे और तुम्हें कंपा देने वाले
जाग नहीं जाएँगे । निस्सन्देह तुम उनकी लूट
बन जाओगे । 8 इसलिए कि तुमने बहुत से
लोगों को लूटा है । तुमने इस देश के लोगों
को जान से मारा है । उनकी मुसीबतों को
तुमने बढ़ाया है । इसलिए बचे हुए लोग
तुम को भी लूटेंगे । 9 उस व्यक्ति को सज़ा
मिले जो अपने घर के लिए अन्याय का और
अनुचित फ़ायदे का लालच करता है ताकि
अपने घोंसले को ऊँचाई पर रखे । ऐसा
इसलिए ताकि वह हर मुसीबत से छूट सके
। 10 ‘तुमने अपने घर के लिए एक शर्मनाक
योजना बनायी है और बहुत से लोगों को
अस्वीकार कर दिया है । इस तरह तुमने
अपने खिलाफ़ ही गुनाह किया है। 11 इसलिए
कि दीवार में से पत्थर चिल्ला उठेंगे । छत
की कड़ी वहीं से उत्तर देगी । 12 हाय उस
व्यक्ति पर जो खून कर -करके एक शहर
बनाता है और बुरा करके एक शहर स्थापित
करता है । 13 देखो, क्या सेनाओं के याहवे
की तरफ़ से ऐसा नहीं है कि लोग मेहनत तो
करते हैं, लेकिन आग उन्हें निगल जाती है
। राज्य राज्य के लोगों की मेहनत बेकार ही
ठहरती है । 14 क्योंकि यह पृथ्वी याहवे की
महिमा के ज्ञान से इस तरह भर जाएगी, जैसे
समुन्दर पानी से भरा रहता है । 15 हाय उस
पर जो अपने पड़ोसी को मदिरा पिलाता है
और उसमें ज़हर मिला कर उसे मतवाला बना
देता है ताकि उस का नंगापन दिख सके ।
16 आदर-सम्मान के स्थान पर तुम अपमान से
भर गए । तुम भी नशा करो और खतनारहित
लोगों की गिनती में आ जाओ । परमेश्वर
के दाहिने हाथ की ओर से प्याला तुम्हारे
पास आएगा और भारी शर्मिन्दगी तुम्हें ढाँक
लेगी । 17 लबानोन के खिलाफ़ की गयी हिंसा
और जानवरों के साथ किये गये अत्याचार
की सज़ा तुम्हें मिलेगी । इसका कारण यह है
कि तुमने इस देश तथा यहाँ के रहने वालों
के विरोध में खून-खराबा किया है । 18 मूर्ति
को तो मूर्तिकार बनाता है, फिर उस मूर्ति से
क्या फ़ायदा ? ढाली गयी मूर्ति और झूठ
सिखाने वाली मूर्ति से कोई फ़ायदा नहीं ।
उन्हें बनाने वाला अपनी कला पर घमण्ड
करता है, लेकिन वे गूँगी हैं । 19 उस मनुष्य
पर हाय, जो एक लकड़ी के टुकड़े या पत्थर
से जागने के लिए कहता है । क्या यह मूर्ति
कुछ सिखा सकती है ? हालांकि इस मूर्ति
के ऊपर सोना चाँदी चढ़ाया जाता है, लेकिन
यह बोल नहीं सकती । 20 लेकिन परमेश्वर

अपने निवास स्थान में हैं और उनके सामने
सभी शान्त रहें ।”

3 शिग्योनीत की तरह हबक्कूक नबी की
प्रार्थना 2 हे याहवे आपकी बड़ाई सुनते
ही मैं घबरा गया । अपने काम को इन्हीं
दिनों में जागृत करें । गुस्से के समय में भी
दया करना न भूलिएगा 3 परमेश्वर तेमान से
आए । पवित्र परमेश्वर परान पहाड़ से आ
रहे हैं। उनका तेज आकाश में छाया हुआ
है और पृथ्वी उनकी बड़ाई से भर चुकी है
। 4 उनकी रोशनी सूरज की तरह थी उनके
हाथ से किरणें निकल रही थीं और इनमें
उनकी शक्ति छिपी हुयी थी । 5 उनके आगे
- आगे मरी और पीछे धधकते कोयलों की
सी लपटें थीं 6 वह पृथ्वी की नाप-जोख कर
रहे थे । उनके देखते ही देश-देश के लोग
घबरा गए । युगों से स्थिर रहने वाले पहाड़
बिखर गए और पहाड़ियाँ झुक गयीं । उनके
तौर तरीके सदा काल के हैं । 7 कुशान के
तम्बुओं में रहने वालों को मैंने बड़ी परेशानी
में पड़े देखा । मिद्यान देश के तम्बुओं के
पर्दे हिलने लगे । 8 क्या परमेश्वर नदियों
से नाराज़ हो गए थे ? क्या आपका गुस्सा
नदियों के विरोध में था ? क्या आप समुन्दर
के खिलाफ़ आग बबूला हो रहे थे? 9 आपका
धनुष खोल में से निकल गया आपकी सज़ा
के शब्द शपथ के साथ निकले थे । आपने
नदियों से पृथ्वी को फाड़ कर रख दिया ।
10 आपको देख कर पहाड़ डर गए आँधी
और जलप्रलय निकल गए, गहरा समुद्र बोला
और अपने हाथों अर्थात लहरों को ऊपर उठा
दिया । 11 तुम्हारे उड़ने वाले तीरों के चलने
की रोशनी से और चमकीले भाले की झलक
की रोशनी से, सूरज और चाँद अपनी-अपनी
जगह पर ठहर गए । 12 गुस्से में आकर आप
चल निकले, आपने देशों को अपने गुस्से से
तहस नहस कर डाला । 13 अपने लोगों को
मुक्त करने के लिए हाँ, अपने अभिषिक्त के
साथ होकर मुक्ति के लिए आप निकल पड़े
। आपने दुष्ट के घर के सिर को कुचला और
पूरी तरह नंगा कर दिया । 14 आपने उसके
सिपाहियों के सिरों को उन्हीं की बर्छियों
से घायल किया है। बवण्डर की आँधी के
समान मुझे इधर-उधर करने के लिए वे आ
पड़े थे। वे सीधे-सादे लोगों को चालाकी
से मार डालने की आशा में ही खुश थे ।
15 घोड़ों पर सवार होकर आप समुन्दर और,
जलप्रलय से भी पार हो गए । 16 यह सुन कर
मेरा कलेजा दहल गया और ओंठ थर-थर
काँपने लगे । मेरी हड्डियाँ सड़ने लगीं और
मैं खड़े-खड़े काँप रहा था । उस दिन का
इन्तज़ार मैं करता रहूँगा । जब दल बाँधकर
प्रजा हमला बोल दे । 17 क्योंकि चाहे अंजीर
के पेड़ों में फूल न लगें, न अँगूर की बेल में
फल, चाहे जलपाई के पेड़ में भी कुछ न लगे
और खेतों में अनाज न हो, भेड़शालाओं में
भेड़-बकरियाँ न हों और न थानों में गाय बैल
हों । 18 फिर भी मैं याहवे के कारण खुश और
मगन होऊँगा । अपने मुक्तिदाता परमेश्वर
से ही मैं अपनी प्रसन्नता हासिल करूँगा ।
19 परमेश्वर याहवे मेरी मज़बूती का कारण
हैं वह हिरन की तरह मेरे पैरों को बना देते हैं
। वही मुझे मेरी ऊँची जगहों पर चलाते हैं ।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com